>

Title: Need to develop Apser village as a tourist centre and as a national heritage site in Barsaliganj Block under Nawada district of Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति महोदय, बिहार के नवादा जिला के अंतर्गत बारसलीगंज प्रखंड में नालंदा विश्वविद्यालय की तरह ही 1500 वर्ष पूर्व अपसढ़ ग्राम में वैदिक, सांस्कृतिक विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी, जहां बौद्ध, सैफ, वैष्नव सप्रदायों का शिक्षण प्रशिक्षण हुआ करता था। विश्व की वैदिक अवधारणाएं वैचारिक मंथन का विषय बनते थे। अपसढ में बाराहवतार भगवान विष्णु की भू देवी उद्धार प्रतिमा भी प्राप्त हुई है जो अपने प्रकार की दुर्लभतम और विशालकाय मूर्ति है जो एक ही पत्थर को काटकर बनाई गई है। अपसढ के साथ पार्वतीपुर, गिरीयक, शाहपुर, जमनुमा आदि गांव भी वैदिक संस्कृति के विभिन्न बिंदुओं के संगम स्थल रहे हैं। गुप्त और पाल राजवंश के मध्य काल के इतिहास को पुरातात्विक दृष्टि से जानने के लिए अपसढ सबसे प्रमुख स्थान है। यह काल उत्तर गुप्त शासकों का था जिसकी सांस्कृतिक राजधानी अपसढ थी। आज अपसढ पुरातात्विक अवशेषों का भग्न रूप है। यहां श्री आदित्य सेन की पत्नी द्वारा निर्मित 200 एकड़ का तालाब थो जिसके नीचे से सीढ़ियां थी और आज भी गहरे कुएं हैं जो भग्न अवस्था में हैं। समग्र जीवन पद्धति है जो सामाजिक संस्कार, चेतना और आचार विचार के योग से निर्मित होती है। सभ्यता बाह्य आकृति है और संस्कृति आंतरिक सांस्कृतिक चेतना होती है। आज अपसढ विभिन्न सामाजिक आर्थिक कारणों से विकास की दौड़ में पिछड़ गया है। कभी-कभी उसकी आंतिरक चेतना विकास का सम्बल नहीं पाकर हिंसक, विस्फोटक आकृति गृहण करने लगती है और इलाके के जनमानस को अपने संघातिक प्रहार से लहुलुहान भी कर बैठती है। अपसढ समाज के विकास का अमृत कलश बन सकता है बशर्ते उसकी ऐतिहासिक गरिमा को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार उसे पर्यटन स्थल की मान्यता प्रदान करे। श्री कोणादेवी तालाब का जीर्णोद्धार करे। अपसढ को राष्ट्रीय धरोहर की पहचान हो, प्रतिवर्ष अपसढ महोत्सव का आयोजन हो और अपसढ की ऐतिहासिक आकृति जो जमीनतल में पड़ी हुई है, उसका खनन करते हुए एक विशालकाय संग्रहालय का निर्माण हो, जहां पुरातात्विक शोध के प्रबंधन की व्यवस्था हो। मैं इस ओर भारत सरकार के पुरातात्विक पर्यटन मंत्री का ध्यान आकृष्ट करता हूं।